

Padma Shri



SHRI BALAN PUTHERI

Shri Balan Putheri, who in spite of his disability leads a successful and blissful life. It is amazing to learn that a man, who is unable to see the world around him wrote, published and marketing by himself 211 books on various subjects and still continuing this endeavour without any weariness. The life of Balan Putheri, his lonely struggle against adverse conditions must be a moral inspiration for all.

2. Born on 15th of September, 1955 at Kadappadi in Malappuram district in Kerala as the fifth child of Shri Chachukutty and Smt. Maniamma of Putheri house, Shri Balan Putheri pursued his graduation BA in 1979 at PSMO college in Tirurangadi in Malappuram district of Kerala. At the time of birth, his right eye had no vision and the vision of the left one was limited. The distance he could see was about three meters only. This state persisted till the age of forty five. During this period he wrote and published 63 books. By that time he lost whatever vision he had. But he did not give up and with his immaculate trust in god and boundless willpower he challenged his blindness. During the next fifteen years he could complete and published another 113 books.

3. Being a complete blind man, Shri Putheri's way of writing books is quite different. Once the subject-matter is fixed, he begins to collect available literatures about it. Someone will read it for him. Listening to it keenly, he grasps the contents. Along with it, he meets those who are familiar with that particular topic. By discussing with them, he gathers more information and clears the doubts if any. Then he starts dictation. While he is dictating someone will write it down. Later, listening to these notes, he narrates the matter. Again it has to be noted down for Desktop Publishing. After proof reading and necessary corrections, it is sent for printing. For all these, he needs the help of friends and others. Since he had no permanent staff for assistance, his friends and well-wishers used to lend a hand to accomplish his efforts. Usually people approached him as and when he required support.

4. Shri Balan Putheri is the recipient of several awards and medals by prominent dignities of Kerala. For eg. gold medal from Dharmasthala in Karnataka, Kunjunni puraskkaram Award from Dr. Leelawathi, Vishista sevarathnam from minister Anoop Jacob, Gurubaba trust Award by M.T. Vasudevan Nair. National gold medal award for best employee/self employed disabilities from Ministry of Justice and Empowerment. After losing his eyesight completely in 2000, he has been continuing with authorizing and publishing several publications and books.



श्री बालन पुतेरी

श्री बालन पुतेरी, दिव्यांग होने के बावजूद एक सफल और सुखमय जीवन जी रहे हैं। यह विस्मयकारी है कि अपने आसपास की दुनिया को देखने में असमर्थ किसी व्यक्ति ने विभिन्न विषयों पर 211 पुस्तक प्रकाशित की हों, खुद ही उनकी बिक्री की हो और अभी भी बिना किसी थकावट के अपने इस प्रयास में लगा हो। उनका जीवन विषम परिस्थितियों में एकाकी संघर्ष और दिव्यांगता पर उनकी विजय सभी के लिए नैतिक प्रेरणा है।

2. 15 सितंबर, 1955, को केरल के मलप्पुरम जिले के कडप्पाडी में श्री चचुकुट्टी और श्रीमती मणियम्मा की पांचवी संतान के रूप में जन्मे, श्री पुतेरी ने वर्ष 1979 में केरल के मलप्पुरम जिले के तिरुरंगाडी के पीएसएमओ कॉलेज से बीए की। जन्म के समय उनकी दाहिनी आंख में बिल्कुल रोशनी नहीं थी और उनकी बायीं आंख से भी बहुत कम दिखाई देता था। अपनी इस आंख से वह केवल तीन मीटर की दूरी तक ही देख सकते थे। उनकी यह दशा पैंतालीस वर्ष की आयु तक कायम रही। इस अवधि के दौरान उन्होंने 63 पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की। तब तक उनकी बायीं आंख में जो थोड़ी सी रोशनी बची थी वह भी चली गई और इसके बाद उनकी दुनिया अंधेरे में डूब गई। लेकिन उनका सृजन कार्य रुका नहीं, चलता रहा। ईश्वर और असीम इच्छाशक्ति पर दृढ़ विश्वास करते हुए उन्होंने अपनी दृष्टिहीनता का चुनौती के रूप में सामना किया। अगले पंद्रह वर्ष के दौरान उन्होंने अपनी और 113 पुस्तकें प्रकाशित की।

3. पूरी तरह दृष्टिहीन व्यक्ति होने कारण, श्री पुतेरी का किताबें लिखने का तरीका काफी अलग है। विषय—वस्तु तय होते ही वह इसके बारे में उपलब्ध साहित्यिक सामग्री जुटाना शुरू कर देते हैं। कोई दूसरा व्यक्ति उन्हें सामग्री को पढ़कर सुनाता है। इसे गौर से सुनकर वह इसे दिमाग में बैठा लेते हैं। इसके साथ—साथ वह उस तरह के खास विषय से वाकिफ लोगों से भी मिलते हैं। उनसे चर्चा करके वह और अधिक जानकारी इकट्ठा करते हैं और यदि कोई संदेह हो तो उसे दूर करते हैं। इसके बाद वह डिक्टेशन देकर विचारों को लिखवाते हैं। इन नोट को सुनकर वह दोबारा डिक्टेशन देते हैं। एक बार फिर से डीटीपी को इस सामग्री नोट करवाया जाता है। प्रूफ रीडिंग और जरूरी सुधार के बाद इसे छपवाने के लिए भेजा जाता है। इन सबके लिए उन्हें दोस्तों और दूसरों की मदद की जरूरत पड़ती है। चूंकि उनके पास मदद के लिए कोई स्थायी कर्मचारी नहीं रहता था, इसलिए उनके मित्र और शुभचिंतक उनके प्रयासों को पूरा करने के लिए उनका हाथ बंटाय़ा करते थे। आम तौर पर, जब भी उन्हें किसी मदद की आवश्यकता होती है, लोग स्वयं उनसे संपर्क कर लिया करते थे।

4. श्री पुतेरी को केरल की प्रमुख हस्तियों द्वारा अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उन्हें कर्नाटक राज्य में धर्मस्थल द्वारा स्वर्ण पदक, डॉ. लीलावती से कुंजुनी पुरस्कार, मंत्री श्री अनूप जैकब द्वारा विशिष्ट सेवारत्न, एमटी वासुदेवन नायर द्वारा गुरुबाबा ट्रस्ट पुरस्कार प्रदान किया गया है। अंततः भारत सरकार के न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी/स्वरोजगार दिव्यांग के लिए राष्ट्रीय स्वर्ण पदक पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 2000 में, अपनी दृष्टि पूरी तरह से खोने के बाद भी, वह कई पुस्तकों का लेखन और प्रकाशन का कार्य कर रहे हैं।